ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 199-202
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में सांस्कृतिक मूल्य

ज्योति बसरा

शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, रायत बाहरा विश्वविद्यालय, मोहाली–चंडीगढ़ (पंजाब), भारत

Received- 06.02. 2022, Revised- 10.03.2022, Accepted - 13.03.2022 E-mail: jyotibasra19@gmail.com

सारांशः – *राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित एक वैश्विक कथाकार, कवि, गजलकार तथा निर्देशक के रूप में तेजेन्द्र शर्मा की पहचान है। वर्तमान में ब्रिटेन में बसने वाले तेजेन्द्र शर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्यदृजगत् में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले किसी परिचय का मोहताज नहीं है। तेजेन्द्र शर्मा का जन्म पंजाब के छोटे से शहर जगरॉव में 21 अक्तूबर, सन् 1952 को हुआ द्य इनके पिता का नाम नंद गोपाल मोहला, माता का नाम पदमा शर्मा है। इनके जन्म स्थान के बारे में कहा जाता है "इस जगरॉव में हिंदुस्तान की दो महान विभूतियों ने जन्म लिया है– एक थे लाला लाजपत राय और दूसरा तेजेन्द्र शर्मा...." इनका जन्म ही सिर्फ गाँव में हुआ लेकिन सम्पूर्ण जीवन शहर में बीता। इनकी दो बहनें आदर्श और किरण हैं। इनके पिता रेलवे मास्टर में कार्यरत थे। पिता की सरकारी नौकरी होने के कारण जब–जब तबादला होता तो समस्त परिवार समेत इनको दूसरी जगह जाना पड़ता। तेजेन्द्र शर्मा हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कहानीकार के साथ कवि, गजलकार, मंच अभिनेता, सिनेमा कलाकार, टीवी सीरियल लेखक, रेडियो पत्रकार, संपादक, मंच संचालक के साथ–साथ कथा यूके के महासचिव में अपनी पहचान बना चुके है। तेजेन्द्र शर्मा एक ऐसी शख्सियत है जिन्हे हम चलती फिरती संस्था कह सकते है। यह अपनी अद्भुत प्रतिभा से लोगों को प्रभावित करते है हमे अपने जीवन में ऐसे व्यक्ति मिलते है जो अपने जीवन, कला, संस्कृति, रंगमंच, साहित्य, आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रोल अदा करते है। इन सभी गुणों से भरपूर तेजेन्द्र शर्मा है। उर्मिला शिरीष कहती हैं, "तेजेन्द्र शर्मा हिन्दी के ऐसे प्रवासी कहानीकार हैं जो दो देशों के बीच वैश्विक दुनिया में आ रहे परिवर्तनों के बीच मानवीय संबंधों की अंतरतहों तक पहुँच कर उसे मनोवैज्ञानिक ढंग से अभिव्यक्त करते हैं।"*

कुंजीभूत शब्द– वैश्विक कथाकार, गजलकार, विभूतियों, कार्यरत, तबादला, साहित्य, कहानीकार, मंच अभिनेता, कलाकार।

इनके अभी तक नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनके द्वारा लिखित काला सागर (1990), ढिबरी टाईट (1990), देह की कीमत (1999), यह क्या हो गया (2003), बेघर आँखें (2007), सीधी रेखा की परतें (2009), कब्र का मुनाफा (2010), दीवार में रास्ता (2012), मौत एक मध्यांतर (2009) आदि कहानी संग्रह है, जो विभिन्न पृष्ठभूमियों में रचित हैं। लेखक का साहित्य तीन पृष्ठभूमियों पर आधारित हैं। प्रथम पृष्ठभूमि में जिसके पात्र व घटनाएं भारतीय हैं, द्वितीय वह जिसमें पात्र भारतीय है लेकिन घटनाएं विदेश में घटित हुई हो, तृतीय जिसके पात्र व घटनाएं दोनों विदेशी है। इनके साहित्य में बूढ़े माँ बाप, स्त्रियां, बाजार यहां तक कि कब्रों से होने वाले मुनाफे तक का लेखा–जोखा है। कहींदृकहीं पर अपने देश से प्यार की खुशबू है तो कहीं कटुरता भी दिखाई देती है। बच्चों से लेकर बूढ़े तक की मानवीय संवेदनाओं को दर्शाता है इनका साहित्य द्य तेजेन्द्र शर्मा कहते है– "लिखना मेरे लिए मजबूरी है। जब कभी आस–पास देखता हूँ तो अन्याय, मूल्यों का विघटन, दोगलापन और स्वार्थ अपने डैनों के नीचे हर व्यक्ति को दबाये दिखते है। तब मेरी कलम अपने आप चलने लगती है। मैं उन लेखकों में से नहीं हूँ जो कहते है कि मैं स्वातः सुखाय लिखता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरा लिखा एक–एक शब्द प्रकाशित हो, उसे लोग पढ़े और उस पर प्रतिक्रिया भी दें। मेरे निकट लेखन केवल अपने भीतर का सत्य खोजने का नाम नहीं है। मेरे लेखन का अर्थ है अपने पाठक से संवाद करना।" इसतरह तेजेन्द्र शर्मा साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए है। भले ही वह शारीरिक रूप से लंदन में बसते है परंतु मानसिक रूप से अपनी जन्मभूमि से जुड़े हुए है।

तेजेन्द्र शर्मा अपने समाज से दूर ऐसे परिवेश में रह रहे है जहां की संस्कृति व परम्पराएं उनके लिए चुनौती है। इसके अतिरिक्त शर्मा ने संस्कृति मूल्यों का वर्णन अपनी कहानियों में किया है। 'संस्कृति' मानवीय जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृति के बारे में लिखते है– "नाना प्रकार की धार्मिक साधनाओं, कलात्मक प्रयत्नों और सेवा, भक्ति तथा योगमूलक अनुरीतियों के भीतर से मनुष्य उस महान् के व्यापक और परिपूर्ण रूप को क्रमक्षः प्राप्त करता जा रहा है जिसे हम संस्कृति शब्द द्वारा व्यक्त करते हैं..मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएं ही संस्कृति है।" समाज जहाँ लोगों में इंसानियत, उदारता, एकता, धर्मनिरपेक्षता, मजबूत सामाजिक संबंध और अच्छे गुणों को पैदा करता है वहीं संस्कृति दूसरों के साथ व्यवहार करने का तरीका, विचार, प्रथा जिसका हम अनुसरण करते है कला, हस्तशिल्प, धर्म, खाने की आदत, त्योहार, मेले, संगीत, नृत्य आदि के कारण संस्कृति विविध जीवन मूल्य भी भिन्न हो जाते है।" समाज में रहते हुए मानव संस्कृति के विविध रूपों को देखते हुए सांस्कृतिक मूल्यों की प्रस्तुति में गहन अन्तसम्बन्ध सिद्ध करता रहता है। वर्षों से समाज और संस्कृति में परिवर्तन होते आए है और होते रहेंगे फलस्वरूप संस्कृति समन्वय की भावना सदैव इसे नया रूप प्रदान करती रही है।

वैश्वीकरण के कारण समकालीन समाज सांस्कृतिक बदलाव के दौर से गुजर रहा है। क्योंकि किसी भी राष्ट्रीय की

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

उन्नति का संबंध उसकी संस्कृति से होता है। क्योंकि राष्ट्र के सकारात्मक तत्व उसकी संस्कृति की उन्नति में निहित होते हैं। धर्मपाल मैनी के अनुसार, "संस्कृति मानव चरित्र की खेती है। खेत की उर्वरता को बार–बार सुनिश्चित करने के लिए जोता जाता है। नीचे की मिट्टी ऊपर तथा ऊपर की मिट्टी नीचे लाई जाती है। उसमें जो सुषुप्त ऊर्जा निकलती है उसे संस्कृति कहते हैं।" मनुष्य के जीवन में संस्कृति विशेष एवं मुख्य रूप से भूमिका निभाते हुए सांस्कृतिक मूल्य सदैव समाज को सुसज्जित करते आ रहे है। साहित्यकार ने संस्कृति में आए बदलाव को ध्यान में रखते बदलते सांस्कृतिक मूल्यों में विशेष स्थान दिया है। डॉ० नगेन्द्र के अनुसार, "सांस्कृतिक मूल्यों से अभिप्राय उन तत्वों से है जो सत्य के संधान और सिद्धी में सहायक सिद्ध होते हैं, जीवन की कल्यान साधना अर्थात् मौलिक और आध्यात्मिक विकास में योगदान करते हैं और सौन्दर्य चेतना को जागृत व विकसित करते हैं। तेजेन्द्र शर्मा ने अपने साहित्य के माध्यम से विदेशी भूमि में बैठे लोगों के जीवन में परिवेशनुरूप सांस्कृतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है।

1.1 परम्परित सांस्कृतिक मूल्य– प्रत्येक समाज में कुछ विशेष मूल्य निर्धारित होते है जो समाज की संस्कृति के वाहक माने जाते हैं। समाज में विचलित नियम, परम्पराओं के अनुरूप ही परम्परित सांस्कृतिक मूल्य निर्मित होते है। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है और परंपरा के अनुरूप ही संस्कृति का चित्र प्रस्तुत होता है। तेजेन्द्र शर्मा ऐसे कहानीकार है जो भारतीय समाज से दूर ऐसे परिवेश में जीवनयापन कर रहे है जहाँ की संस्कृति व परम्पराएँ उनके लिए चुनौतीभरपूर हैं। लम्बे समय से ब्रिटेन में रह रहे तेजेन्द्र शर्मा ने कहानियों के माध्यम से परंपरित सांस्कृतिक मूल्यों का चित्र परिलक्षित किया हैं। लेखक भारत और इंग्लैंड दोनों देशों की कड़ी को प्रस्तुत करते हैं। भारतीय परंपरा संस्कृति का खास उत्सव माता–पिता द्वारा बच्चों की शादी करना है। जब बच्चे बड़े हो जाते है तो माता–पिता को बच्चों की शादी की चिंता सताने लग जाती हैं। 'अभिशप्त' कहानी में ब्रिटेन में रहते माता–पिता अपनी बेटी निशा की बढ़ती उम्र के कारण शादी को लेकर चिंतित हैं। माता–पिता निशा का विवाह कराकर अपनी पुत्री का घर बस हुआ देखना चाहते है– "मां–बाप को चिंता दूसरी ही थी। बेटी तीस पार कर चुकी है। विवाह की उम्र तो निकलती जा रही है। लड़की कहीं गलत राह पर न निकल जाए.... इन खतरों से बचने का एक मात्र उपाय उन्हें रजनीकान्त में दिखाई दिया।" बच्चों के प्रति माता–पिता का नैसगिकस्नेह कोई भी अन्य संस्कृति बदल नहीं सकती। मनुष्य चाहे एक देश से दूसरे देश में पलायन कर जाए लेकिन वह अपने संस्कारों एवं रीति रिवाजों को कभी नहीं भूलता और और उसमें हमेशा ही बंधे रहने की कोशिश करता है। व्यक्ति के आचार–विचार, व्यक्ति के पहरावे से उस समाज के परम्परित सांस्कृतिक मूल्यों की झलक झलकती है। 'कब्र का मुनाफा' कहानी में दिखाया गया है कि ब्रिटेन में रहते हुए मुस्लिम खलील अपनी सोशलिस्ट पत्नी आबिदा द्वारा हिन्दोस्तान की तारीफ सुनने पर उसे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने के लिए कहता है–"आप तो बस हिंदू हो गई हैं। आप सिंदूर लगा लीजिए, बिंदी माथे पर चढ़ा लीजिए और आर्य समाज में जाकर शुद्धि करवा लीजिए।" खलील अपनी पत्नी को अपमानित करने का प्रयास करता है। खलील मुस्लिम तथा भारतीय परम्परित सांस्कृतिक मूल्यों की भिन्नता को प्रकट करता है। व्यक्ति की भाषा, विचारों एवं व्यवहार भी उस देश की झांकी प्रस्तुत करते है जिस देश की परंपरा और संस्कृति को वह अपनाए हुए है। पाश्चात्य सांस्कृतिक मूल्यों का चित्र प्रस्तुत करती 'कैलिप्सो' ऐसी कहानी है जो जीवन को किसी बंधन के स्वतंत्र रहकर व्यतीत करने में यकीन रखती है जो कि भारतीय परंपरित मूल्यों से परे हैं–"अंग्रेज लोगों की सोच भारतीय लोगों की सोच से अलग होती है। उन्हें निजी स्वतन्त्रता बहुत प्यारी होती है।"

पाश्चात्य लोगों को न किसी बंधन में बंधे रहने तथा स्वतंत्र रूप से जीवन को जीना ही पाश्चात्य संस्कृति मूल्यों की पहचान है। भारतीय समाज में विवाह की तरह मृत्यु के समय भी कुछ संस्कार अहम माने जाते है। भारतीय लोग अपने संस्कारों एवं परम्पराओं से कुछ इस तरह से बंधे हुए है कि विदेश में रहते हुए भी अपनी संस्कारों एवं प्राचीन परम्पराओं को भूलते तक नहीं। 'कड़ियाँ' कहानी कुछ इस तरह का यथार्थ प्रस्तुत करती कहानी है जब राज ब्रिटेन में अपने दादा की मृत्यु के समय अपने पिता को भारतीय परंपरित मूल्यों को निभाता हुआ देखता है– "दादा जी चार कन्धों पर सवार हुए वहाँ पहुंचे। पापा इनको क्या हुआ? सिर मुंडा हुआ, धोती शरीर पर लपेटे, हाथ में कमण्डल–जल से भरा।" शर्मा ने अपने अनुभवों के आधार पर कथा साहित्य में परम्परित सांस्कृतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है।

1.2 बदलते सांस्कृतिक मूल्य– परिवर्तन प्रकृति का नियम हैं। जब–जब प्रकृति में बदलाव व परिवर्तन होता है तब तब समाज में भी परिवर्तन होना स्वाभाविक है। समाज में परिवर्तन के फलस्वरूप संस्कृति भी प्रभावित होती है। तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में आए बदलाव के कारण सांस्कृतिक मूल्यों के प्रभाव को देखा गया हैं। बाजारवाद, नए परिवेश आदि बदलते सांस्कृतिक मूल्यों को निर्धारित करते है। लेखक ने बदलते सांस्कृतिक मूल्यों का वर्णन कहीं साकारात्मक रूप में तो कहीं सांस्कृतिक क्षरण के रूप में किया है। 'कोख का किराया' कहानी एक ऐसी कहानी है जो इंग्लैंड में बदलते सांस्कृतिक मूल्य बच्चे के जन्म के संबंध में कुछ अजीब तरह के परिवर्तन देखने को मिलते हैं– "इंग्लैंड का अजीब सिलसिला है। सोलह वर्ष से कम उम्र की लड़की दुकान से सिगरेट नहीं खरीद सकती, माँ बन सकती है, वयस्क हुए बिना विवाह नहीं हो सकता किंतु माँ बना जा सकता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

किसी सगे संबंधी के चले जाने से संबंधों में आया परिवर्तन कितना कटु हो सकता है 'काला सागर' कहानी में आए मृत लोगों के संबंधियों की मानसिकता का पता चलता है। जब कोई अपना इस संसार को छोड़ चला जाता है तो व्यक्ति अपने शोक व्यवहार एवं संवेगात्मक भावनाओं के माध्यम से दुख को जाहिर करता है, लेकिन 'काला सागर' कहानी में कनिष्क विमान दुर्घटना में मृत लोगों की शनाख्त हेतु लोगों को लंदन भेजने उनकी वार्तालाप से पता चलता है कि परम्परित सांस्कृतिक मूल्य उनके सम्मुख फटकते तक नहीं है–"यार, पी ले आज जी भर के, हमें कौन से पैसे देने हैं द्य यह काम अच्छा किया एअरलाइन ने" ....क्यों ब्रदर आपने कौन सा वी.सी.आर.लिया? मुझे तो एनवी 450 मिल गया 'अपने सोनी ढूँढ ही लिया' 'हमारे भाग्य में कहां जी द्य जे.वी.सी. का लिया है।" मृत व्यक्तियों की पहचान करने गए विदेश में संबंधियों को दुख इस बात का नहीं जो हादसे में मारे गए है, बल्कि दुख पसंदीदा टीवी या वी. सी ना मिलने का है। कहानी में मृत व्यक्ति के संबंधी बदलते सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका निभा रहे है। धर्म की आड़ में सांस्कृतिक मूल्य मानवता पक्ष में रहे हैं। समाज में बढ़ती रूढ़ता का कारण बदलते सांस्कृतिक मूल्य की देन है। 'टेलीफोन लाइन' कहानी का नायक अवतार विदेश में रहते हुए सांस्कृतिक मूल्यों को त्याग नहीं पाया। अवतार जो बरसों से लंदन में रह रहा है लेकिन वह अपने जीवन में बदलते सांस्कृतिक मूल्यों की छाप बनाए हुए है जो कभी भी वह अपने जीवन में त्याग नहीं पाया। भारत में रहते हुए वह सांस्कृतिक मूल्य प्राप्त कर चुका था–"अवतार की माँ सिख थी और पिता हिन्दु, माँ ने अवतार को सिख धर्म की सीख दी। लेकिन माता–पिता दुर्गा मंदिर उसी श्रद्धा से जाते थे जैसे कि गुरुद्वारे। घर में गुरु नानक और श्री कृष्ण की फोटो साथ साथ टंगी थी।"

अवतार पर परिवार से प्राप्त हुए सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव पड़ते हुए अवतार इंसानीयत को बड़ा धर्म मानता है वह किसी वाददृविवाद में नहीं पड़ता। जहाँ 'टेलीफोन लाइन' का नायक अवतार लंदन रहते हुए बदलते सांस्कृतिक मूल्यों की छाप बनाए हुए है, वहीं 'गंदगी का बक्सा' कहानी की नायिका जया को समझाते हुए राज बदलते सांस्कृतिक मूल्य प्रत्येक धर्म को महत्व देते हुए सबसे ऊपर मानवता और संस्कृति को मानते हैं कहता है कि–"यदि दुनिया में सभी लोग मुस्लमान हो जाए या फिर इसाई हो जाएं, उससे क्या अंतर होगा। यह असिम्ता, यह पहचान, यह संस्कृति कोई जड़ वस्तु नहीं, ये परिवर्तनशील है।"

आज का मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि वह अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए धार्मिक मूल्य को भी नकारने लग गया है। कई बार धार्मिक संस्कार भी अपने लक्ष्य में बाधक लगने लग जाते है। 'देह की कीमत' कहानी का नायक हरदीप विदेश जाने की लालसा में किसी भी हद तक गुजर जाने की सोचता है। जब उसको पता चलता है की एअर लाइन में नौकरी प्राप्त करना के लिए सिख होना बाधक प्रतीत होता है तो वह अपने केशों को कटवा आता है–"विदेश की सैर का खुला न्यौता. ..हरदीप को कहीं से भनक लग गई कि पगड़ी धारक सिक्खों को यह नौकरी नहीं मिल सकती। बस कर आया केशों का अंतिम संस्कार। कर दिया दार जी की भावनाओं का खून।" हरदीप अर्थ की चकाचौंध के बदलते सांस्कृतिक मूल्य परंपरित धार्मिक संस्कारों का होम करने में झिझकते नहीं। तेजेन्द्र शर्मा ने भारतीय के साथ साथ इंग्लैंड की संस्कृति के उच्चतम मूल्य अपनी कहानियों में दिए है जो कि बदलते परिवेश के द्वारा मूल्यवत्ता पर हुए कुठारघातों को भी रेखांकित करते है।

निष्कर्ष यह है कि तेजेन्द्र शर्मा एक प्रतिष्ठित कहानीकार हैं। इनकी अधिकांश कहानियों में संस्कृति मूल्यों का वर्णन कूट–कूट कर भरा है। लेखक ने अपने अनुभवों के आधार पर कहानियों में आए परंपरित सांस्कृतिक मूल्यों के साथ साथ बदलते सांस्कृतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है। किसी भी देश या सभ्यता का खजाना सांस्कृतिक मूल्य रहे हैं। समाज में परिवर्तन की तरह मनुष्य के संस्कारों में भी यदा–कदा परिवर्तन होता रहा है। मानव एक आत्मनिर्भर प्राणी है लेकिन इतना आत्मनिर्भर वह पहले कभी नहीं था। आज वह मृत्योपरांत के संस्कारों का प्रबंध मृत्यु से पहले ही स्वयं करने लग पड़ा है। आधुनिक काल की युवा पीढ़ी दूसरों के साथ अपनी संवेदनाओं का गला घोंटने की बजाए जीने दो में विश्वास रखने लगी है। धर्म, खान–पान, त्यौहार को लेकर सांस्कृतिक परिवर्तन विश्व संस्कृति का ऐलान कर चुका है। परिणामस्वरूप सांस्कृतिक मूल्य वैश्विक स्तर प्राप्त कर चुके हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तेजेन्द्र शर्मा, यह क्या हो गया, (दिल्ली : डायमंड पॉकेट बुक्स, 2003), पृ० 7.
2. बृजनारायण शर्मा, हरिभटनागर (संपा०), तेजेन्द्र शर्मा वक्त के आईने में, भोपाल:रचना समय, 2009, पृ० 242.
3. नई धारा (पत्रिका), प्रवासी कथाकार तेजेन्द्र शर्मा विशेषांक, मैं और मेरा समय, तेजेन्द्र शर्मा, पृ.16
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद, पृ.68.
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद, पृ.68.
6. मानव मूल्य–पूरक शब्दावली का विश्व कोश (खंड–5), धर्मपाल मैनी तथा अन्य (संपा.) दिल्ली, सरूप एण्ड सन्ज, पृ. 887.
7. डॉ० नगेन्द्र, नई समीक्षा नये संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, पृ.80.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

8. तेजेन्द्र शर्मा, बेघर आँखें, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ.66.
9. तेजेन्द्र शर्मा, कब्र का मुनाफा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.154.
10. तेजेन्द्र शर्मा, दीवार में रास्ता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ.10.
11. तेजेन्द्र शर्मा, सीधी रेखा की परतें, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ.267.
12. तेजेन्द्र शर्मा, बेघर आँखें, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ.38.
13. तेजेन्द्र शर्मा, सीधी रेखा की परतें, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ.276.
14. तेजेन्द्र शर्मा, कब्र का मुनाफा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.94.
15. तेजेन्द्र शर्मा, सपने मरते नहीं, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ.112.
16. तेजेन्द्र शर्मा, यह क्या हो गया, डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ.117.
17. तेजेन्द्र शर्मा, यह क्या हो गया, डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ.117.

*****